द लास्ट लीफ की तरह ये मेरी अंतिम बात है। हालांकि आपको इसकी भी ज़रूरत नहीं, लेकिन मेरे लिये ये कह देना ज़रूरी है। आपको जो चीज़ें इल्ज़ाम लगेंगी..वो सब मैं जीने को अभिशप्त हूं।

हमें समझ आता है कि क्या प्यार है, क्या आकर्षण, क्या लस्ट, क्या टाइमपास। मैंने जीवन में दूसरी बार प्रेम किया..आपसे। कितना गहन, कितना सच्चा ये एक्सप्लेन करने की आवश्यकता महसूस नहीं हो रही। अभिषेक को भूलने में मुझे 19 साल लगे..उस समय उम्र भी थी आगे बढ़ जाने की और अब तो आदत भी हो चली थी उस दर्द की। आप आए तो फिर प्रेम आया मेरे जीवन में। मैं पूरी सृष्टि के प्रति कृतज्ञता से भर गई। जैसा भी जितना भी था..मेरे लिये पर्याप्त था। लेकिन आपने खुद अपने हाथों से मेरे भीतर से प्रेम को निकालकर उसकी जगह दर्द भर दिया। फिर इतना गहरा दर्द कि मेरे लिये तय कर पाना मुश्किल हो रहा है कि मैं जिंदा हूं कि मर चुकी हूं। अलाइव वाली फीलिंग ही खत्म हो गई है। 19 साल की पीड़ा से ज़रा निकल ही रही थी कि आपने फिर मुझे दर्द से भर दिया है। अब मरने तक के लिये ये पर्याप्त है..मेरा काम हो गया..अब आगे बढ़ने के लिये कोई राह भी नहीं है, न ही उम्र।

आपको समझ ही नहीं आ रहा होगा कि हुआ क्या है… आप 9 मई को एक कविता भेजते हैं, मेरी तरफ से जवाब नहीं मिलता। फिर आप 28 मई को फोन करते हैं...25 दिन बाद। इससे पहले 3 मई को हुआ था आखिरी फोन। मैसेज भी 9 मई से पहले 3 मई को ही था आखिरी। आप 6 दिन बाद मुझे मैसेज करते हैं..अपने मूड के हिसाब से..मौसम के रूमानी होने के हिसाब से और चाहते हैं कि मैं 6 दिन बाद भी बिल्कुल सामान्य प्रतिक्रिया दूं। 3 मई के फोन और 9 मई के मैसेज के बाद 28 मई को फोन करते हैं..और मुझे बिल्कुल वैसा ही पाना चाहते हैं। एक मैसेज का जवाब नहीं मिला तो खामोश हो गए आप..मैं साल भर से जाने कितने सवाल कर रही हूं आपसे और मुझे अब तक कोई उत्तर नहीं मिला।

तो क्या आपने एक खेल रचाया..जब तक मन हुआ बने रहे और मन भर गया या स्थितियां प्रतिकूल हो गई तो चल दिये उठकर। मुझे तहस नहस करके। बर्बाद करके। इस रिश्ते की शुरूआत आपने ही की थी..बहुत बराबरी से साथ चले थे आप देर तक। और जब मैं पूरी तरह इन्वॉल्व हो गई तो आप सब भूल गए। हर रिलेशनशिप कुछ ज़म्मेदारियां लेकर आता हैं..जिम्मेदारी मतलब तकलीफ में विपरित हालात में साथ देना। सुख का समय तो गुज़र ही जाता है। आपने मुझे एकदम अकेला छोड़ दिया। जबकि मैं बता चुकी थी कि डिप्रेशन में जा चुकी हूं और मेरा इलाज सिर्फ आप हैं। 15 दिन में एक बार मिलते, न मिलते फोन कर लेते, न करते फोन मैसेज कर लेते। लेकिन यहां तो 25 दिन का अंतराल था...।

आप डरे हुए हैं दरअसल...आशा और कविताजी के प्रकरण से इतना भयग्रस्त हैं कि उसका सारा बोझ मेरे ऊपर डाल दिया। आपको लगता है आपने अपनी ज़बान से प्रेम उच्चारित कर दिया तो आपकी निष्ठा भंग हो जाएगी पत्नी के प्रति। और इसे आप मेरी भलाई का जामा पहनाकर बरी हो जाना चाहते हैं। तुम और परेशान न हो इसलिये नहीं कहता, इसलिये नहीं व्यक्त करता, ये कितना अच्छा एक्सक्यूज़ है न। आपकी निष्ठा (?) की परिभाषा समझ नहीं आती। मुझसे मन की बात कह दी तो पत्नी से छल कर बैठेंगे ? या खुद को तसल्ली दे रहे हैं कि कल को अगर कुछ सामने भी आया तो कह सकूंगा पत्नी से कि मैंने कभी नहीं कहा उससे कि प्रेम करता हूं, वो ही गलत समझ बैठी। इसमें कुछ झूठ भी नहीं होगा क्योंकि आपने तो वास्तव में नहीं कहा। निष्ठा क्या है...कहेंगे भर नहीं तो निष्ठा बनी रहेगी। बिस्तर तक आ जाएंगे लेकिन नाभि से नीचे नहीं उतरेंगे तो निष्ठा बनी रहेगी पत्नी के प्रति। निष्ठा जैसी कोई चीज़ है अगर तो वो उसी क्षण समाप्त हो गई थी जब आपके मन में मेरे प्रति पहली बार आकर्षण जागा था, जब आपने मुझे पलटकर देखा था, जब पहली बार स्पर्श किया था। और कैसी निष्ठा ? मैं या आप भी कविता जी से कोई जानकर छल तो नहीं करना चाहते रहे...ये तो घट गया जिसपर किसी का वश नहीं था।

आपकी संवेदनशीलता और सादा बातों ने मन मोहा था। किसी पुरूष के लुक्स, स्टेटस पैसा कभी मायने नहीं रखता मेरे लिये। लगा ये कितने संवेदनशील व्यक्ति हैं। आपके कहे में..लिखे में हर जगह मानवीयता। अब तो किसी की संवेदनशीलता पर भी भरोसा नहीं हो पाएगा।

आपने व्यक्त करने के स्तर पर, मन से, देह से..हर जगह अपूर्ण छोड़ दिया मुझे। मैं तब भी ठीक थी, क्योंकि आप थे मेरे साथ किसी न किसी रूप में। लेकिन आपको तो असल में अपना घर बचाना है, पत्नी के प्रति अब लेशमात्र भी अपराधी नहीं महसूसना है। उन्हें कोई पीड़ा नहीं पहुंचानी है। और इन सारी कंडिशन्स के साथ मेरा साथ भी चाहिए। और आपको मुझे कुछ भी नहीं देना है, और बस मुझे पीड़ा पहुंचानी है। बस, जरा स्थितियां बदली और आपने मुझे मेरे हाल पर छोड़ दिया, अब जियो या मरो ये तुमपर। मैं बीमार हो चुकी हूं एक बार फिर..मन से भी शरीर से भी।

मैंने क्या चाहा था..कुछ मांगा कभी आपसे ? कभी नहीं कहा कि मुझे किसी को रिप्लेस करना है, शादी कीजिये ये तो सोचा तक नहीं। लेकिन जितना मेरे हिस्से का था, वो भी नहीं मिला कभी। और अगर मेरा कोई हिस्सा ही नहीं था तो आप सालभर तक क्या कर रहे थे मेरे साथ। प्रेम के प्रश्न पर आपका प्रतिप्रश्न था..कैसा प्रेम ? कैसा प्रेम संभव है हमारे बीच? जिस तरह हम मिल रहे थे, जिस तरह मन और देह मिल रही थी...क्या भाई-बहन का प्रेम संभव है..या पिता पुत्री का...या फिर दोस्त का भी? आप इतने नादान हैं ?

मैं ऐसा ही हूं...बस इतना कहने से बरी हो जाते हैं आप ?

ये कोई छोटी घटना नहीं हुई है मेरे साथ। शादी में होता तो इसे तलाक जैसा कुछ मानते और तब, और वो भी तब घटता है जब दोनों पक्षों में मनमुटाव हो। यहां तो मैं प्रेम से लबालब भरी थी और आप यकायक गायब हो गए। मैं सोचती ही रह गई कि ये क्या हो रहा है मेरे साथ..क्यों हो रहा है। कोई गाड़ी को भी एक स्क्रेच लगा जाता है तो उसके लिये कानून है, आपने तो मुझे अंदर तक छिन्न भिन्न कर दिया है। मैं रातों में तीन बजे उठकर बैठ जाती हूं और सुबह होने तक लगातार रोती रहती हूं पागलों जैसे।

 इस बार मैं मर चुकी हूं...और इसका सारा श्रेय आपको जाता है। सच में ही मर जाती, अगर क्षण भर को भी पापा का खयाल चुक जाता मन से। लेकिन अब जब भी मरूंगी चाहे वो दो महीने बाद हो या दो साल बाद, चाहे अटैक से हो या एक्सीडेंट से...उसका असल क्रेडिट आपको ही रहेगा। इस दर्द के साथ मैं अधिक जी नहीं पाऊंगी ये तय है।

इतना सब लिख दिया क्योंकि मुझसे सहा नहीं जा रहा.. इल्ज़ाम विल्जाम मत समझियेगा। और अब मुझे आपके किसी उत्तर की प्रतीक्षा भी नहीं। पता है आपको खामोश ही रहना है हमेशा की तरह।

बार बार मन में सवाल उठता है...क्या आप ऐसा व्यवहार अपनी पत्नी या बेटे के साथ करते कभी ? मैं बाहरी हूं तो आप कैसे भी बरत सकते हैं मुझे? आपने मुझे खत्म कर दिया यार। अब जब इतनी मेहनत की है तो सुख से रहियेगा....